महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की कैरियर के प्रति सजगता का अध्ययन – एक सर्वेक्षण

अनिता जोशी*
सपना कश्यप**

प्राचीन परिप्रेक्ष्य में व्यक्तित्व विकास व रोजगार प्राप्ति में सामान्य शिक्षा की भूमिका ही प्रभावी थी। परन्तु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कैरियर के क्षेत्र में निरन्तर बढ़ते आयामों को देखते हुए उपयुक्त कैरियर चयन एक चुनौतीपूर्ण कार्य हो गया है। शिक्षा योजनाएं भी कैरियर को लक्ष्य करके ही बनायी जाने लगी हैं। कैरियर छोटा-सा शब्द होने पर भी विशद् सम्भावनाओं को समेटे हुए है। यदि शिक्षा जीवन का आधार है तो कैरियर एक टर्निंग प्वांइट है। जीवन की पूर्ण सफलता रुचि, योग्यता व आवश्यकता के अनुरूप व्यवसाय चयन पर निर्भर करती है। इसलिए वर्तमान समय में कैरियर काउंसलिंग एवं प्लेसमेंट सेल अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका स्थापित कर चुके हैं। परन्तु यह एक विचारणीय प्रश्न है कि विद्यार्थी, जिनके लिए ये प्रयास किये जा रहे हैं, क्या वे भी अपने कैरियर के प्रति वास्तविक रूप से सजग हैं? उनकी कैरियर के प्रति क्या रुचि है? उनकी आकांक्षा का स्तर क्या है? यह सर्वेक्षण इन्हीं प्रश्नों का उत्तर खोजने तथा इस संदर्भ में उपयुक्त निष्कर्ष तक पहुँचने का एक व्यावहारिक प्रयास है।

सर्वेक्षण के उद्देश्य

महाविद्यालय में प्रवेश के समय विद्यार्थी अपने कैरियर लक्ष्य के साथ महाविद्यालय में प्रवेश लेते हैं तथा अध्ययनकाल में लक्ष्य की ओर अग्रसर होते जाते हैं। स्नातक अन्तिम वर्ष तक विद्यार्थी को लक्ष्य प्राप्ति हेतु तत्पर होना ही चाहिए। इसी दृष्टिकोण से यह सर्वेक्षण मुख्य रूप से महाविद्यालय के स्नातक अन्तिम वर्ष में अध्ययनरत विद्यार्थियों के कैरियर लक्ष्यों के प्रति स्पष्टता का अध्ययन करने हेतु किया गया। क्योंकि कैरियर काउंसलिंग एवं प्लेसमेंट सैल में काउंसलिंग हेतु आने वाले विद्यार्थी मुख्य रूप से स्नातक के

* *असिस्टेंट प्रोफेसर*, एम.बी.राज.स्ना.महा., हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखण्ड
** *असिस्टेंट प्रोफेसर*, एम.बी.राज.स्ना.महा., हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखण्ड

उपरान्त स्नातकोत्तर विषयों के चयन की जानकारी प्राप्त करने आते हैं। अधिकांशतः दृष्टिगत होता है कि विद्यार्थियों का दृष्टिकोण भविष्य में कैरियर चयन तथा व्यवसाय चयन के प्रति अति अस्पष्ट होता है। विद्यार्थियों द्वारा उनके चयनित कैरियर से सम्बन्धित लक्ष्य दूरगामी लक्ष्यों (long term goals) को ध्यान में न रखकर अपर्याप्त जानकारी एवं अपूर्ण सूचनाओं के साथ निर्धारित किये जाते हैं और उसी के अनुरूप विषय व व्यवसाय का चयन किया जाता हैं। अर्थात् उनका कैरियर एवं व्यवसाय चयन लघुकालीन लक्ष्यों (short term goals) को ध्यान में रखकर होता है। अतः यह सर्वेक्षण एक प्रकार का आवश्यकता विश्लेषण (need analysis) है, जिसका मुख्य उद्देश्य महाविद्यालय के विद्यार्थियों के शैक्षिक जनसांख्यिकी (Academic Demographic) का अध्ययन कर उनकी सामान्य एवं विशिष्ट आवश्यकताओं की पहचान करना है, जिससे भविष्य में विद्यार्थियों की अभिरुचि, आवश्यकता तथा लक्ष्यों को ध्यान में रखकर निर्देशन प्रदान किया जाए तथा तदनुरूप कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार हो सके तथा चिन्हित समस्याओं पर सुधारात्मक कार्य किया जा सके। सर्वेक्षण के मुख्य उद्देश्य बिन्दुवार निम्न रूप में प्रदर्शित हैं।

1. विद्यार्थियों द्वारा पूर्व प्राप्त प्रशिक्षणों के बारे में सूचना एकत्र करना।
2. विद्यार्थियों द्वारा चयनित कैरियर लक्ष्यों की जानकारी प्राप्त करना।
3. विद्यार्थियों की कैरियर परिपक्वता (career maturity) का अध्ययन करना।
4. विद्यार्थियों की कैरियर व व्यावसायिक रुचि का अध्ययन करना।
5. विद्यार्थियों के कैरियर व व्यावसायिक लक्ष्यों के प्रति झुकाव/प्रवृत्ति (Tendency) का अध्ययन करना।
6. अध्ययन के आँकडों व परिणामों के आधार पर भावी कार्य योजना तैयार करना।
7. विद्यार्थियों की कैरियर विकास/विस्तार/परिवर्धन की आवश्यकताओं की पहचान करना।
8. शैक्षिक एवं कैरियर सम्बन्धी सुधारात्मक क्षेत्रों की पहचान करना।

सर्वेक्षण विधि (Survey Method)

इस सर्वेक्षण रिपोर्ट में शैक्षिक सत्र 2011–12 में एम.बी.राजकीय महाविद्यालय हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखण्ड में स्नातक तृतीय वर्ष में प्रवेषित छात्र–छात्राओं को ही सर्वे प्रतिदर्ज़ (sample) के रूप में चयनित किया गया है। एम.बी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हल्द्वानी छात्र संख्या की दृष्टि से कुमाऊं मंडल का सबसे बड़ा महाविद्यालय है। इस महाविद्यालय की स्थापना वर्ष 1960 में हुई तथा 29 अक्तूबर 2010 को महाविद्यालय में कैरियर काउंसलिंग एण्ड प्लेसमेंट सैल स्थापित किया गया।

सर्वेक्षण के उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु विद्यार्थियों के कैरियर व उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि के आँकड़ों का एकत्रीकरण अनिवार्य था। परन्तु महाविद्यालय के छात्र संख्या को दृष्टिगत रखते हुए सूचना एकत्र करना एक मुख्य समस्या थी। अतः कैरियर काउंसलिंग एवं प्लेसमेंट सैल द्वारा एक सर्वेक्षण प्रपत्र तैयार किया गया। जिसे महाविद्यालय के प्राचार्य से अनुमति प्राप्त होने के उपरान्त महाविद्यालय के प्रवेश फार्म के साथ

संलग्न किया गया तथा इस पर सूचनाएं देना छात्र-छात्राओं के लिए अनिवार्य किया गया। इस प्रारूप पर दी गयी सूचनाओं/आँकड़ों के आधार पर ही आँकड़ों का संकलन किया गया।

इस सर्वेक्षण में वर्ष 2011-12 में सभी वर्गों (कला, विज्ञान, वाणिज्य) के स्नातक स्तर अन्तिम वर्ष में प्रवेशित विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया। आँकड़ों के संकलन के पश्चात् उनका प्रतिशत विश्लेषण किया गया।

परिणाम

आँकड़ों के विश्लेषण के उपरान्त प्राप्त सूचनाओं के परिणाम निम्नवत् हैं।

तालिका 1 के आँकड़े स्नातक स्तर के छात्र-छात्राओं के वितरण को दर्शाते हैं। तालिका से स्पष्ट है कि प्रत्येक वर्ग में छात्राओं का पंजीकरण छात्रों की तुलना में अधिक है। कुल पंजीकृत विद्यार्थियों (2070) का 65 प्रतिशत छात्राएँ हैं। सर्वेक्षण में स्नातक स्तर में सबसे अधिक प्रतिशत (69.13) संख्या बी.ए. के विद्यार्थियों का है। विज्ञान वर्ग में 11.31 प्रतिशत तथा वाणिज्य वर्ग में 19.56 प्रतिशत विद्यार्थी पंजीकृत हैं। पाई रेखाचित्र 1 के माध्यम से आंकडों का प्रदर्शन निम्नवत है:

तालिका 1 स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों का विवरण

कक्षा	*लड़कों की संख्या*	*प्रतिशत*	*लड़कियों की संख्या*	*प्रतिशत*	*कुल परीक्षण Total Cases*	*प्रतिशत*
बी.एस.सी. तृतीय	95	04.59	139	06.72	234	11.31
बी.कॉम. तृतीय	198	09.56	207	10.00	405	19.56
बी.ए. तृतीय	428	20.68	1003	48.45	1431	69.13
कुल	**721**	**34.83**	**1349**	**65.17**	**2070**	**100.00**

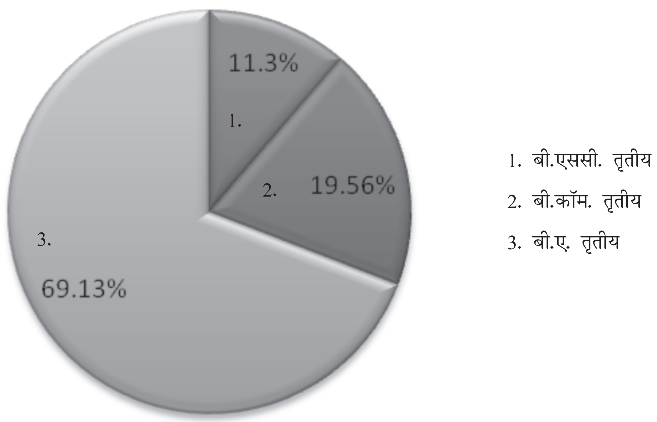

पाई रेखाचित्र 1: स्नातक स्तर पर विभिन्न वर्गों में छात्रों का प्रतिशत

तालिका 2 तथा पाई रेखाचित्र 2 के माध्यम से विद्यार्थियों के पिता के व्यवसाय के विषय में जानकारी प्रदर्शित की गयी है –

तालिका 2 पिता का व्यवसाय

	बी.ए. तृतीय		*बी.कॉम. तृतीय*		*बी.एससी. तृतीय*		*कुल संख्या*	*प्रतिशत*
व्यवसाय का नाम	*संख्या*	*प्रतिशत*	*संख्या*	*प्रतिशत*	*संख्या*	*प्रतिशत*		
व्यापार	94	4.54	87	4.20	23	1.11	204	9.86
कृषि	636	30.72	67	3.24	58	2.80	761	36.76
नौकरी/सरकारी/गैर-सरकारी	454	21.93	210	10.14	123	5.94	787	38.02
मजदूर	119	5.75	11	0.05	11	0.05	141	6.81
कोई सूचना नहीं	128	6.18	30	1.45	19	0.92	177	8.55
कुल	**1431**	**68.79**	**405**	**19.56**	**234**	**11.64**	**2070**	**100.00**

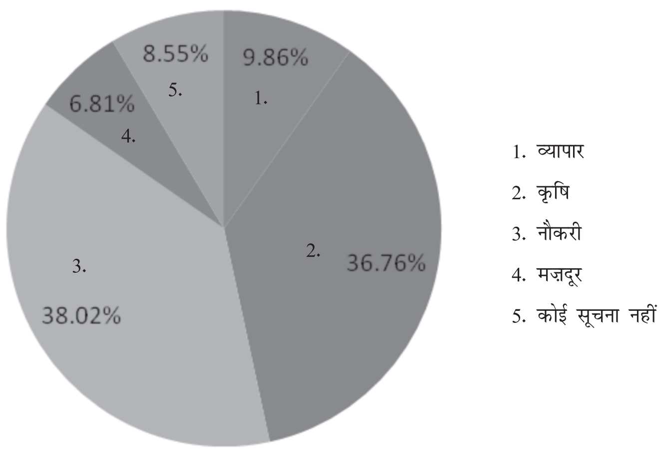

पाई रेखाचित्र 2: विद्यार्थियों के पिता का व्यवसाय

तालिका 2 महाविद्यालय के विद्यार्थियों के पारिवारिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत पिता के व्यवसाय को प्रदर्शित कर रही है। तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है कि सबसे अधिक संख्या उन विद्यार्थियों की है जिन्होंने यह रिपोर्ट किया कि उनके पिता नौकरी पेशा हैं। इसके उपरान्त 36.76 प्रतिशत विद्यार्थियों के पिता व्यवसाय में संलग्न हैं। तालिका में रिक्त स्थान के अन्तर्गत प्रदर्शित संख्या उन विद्यार्थियों की है जिन्होंने प्रश्नावली के इस बिन्दु पर सूचना नहीं दी।

तालिका 3 माता का व्यवसाय

व्यवसाय का नाम	बी.ए. तृतीय		बी.कॉम. तृतीय		बी.एससी. तृतीय		कुल संख्या	प्रतिशत
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत		
व्यापार	07	0.34	00	00	00	00	07	0.34
कृषि	252	12.17	13	0.63	14	0.68	279	13.48
नौकरी/सरकारी/गैर-सरकारी	16	0.77	25	1.28	04	0.19	45	2.17
मजदूर	10	0.48	01	0.05	01	0.05	12	0.58
गृहणी	851	41.11	282	13.62	172	8.31	1305	63.04
कोई सूचना नहीं	295	14.25	84	4.06	43	2.08	422	20.39
कुल	**1423**	**69.12**	**412**	**19.64**	**234**	**11.3**	**2070**	**100.00**

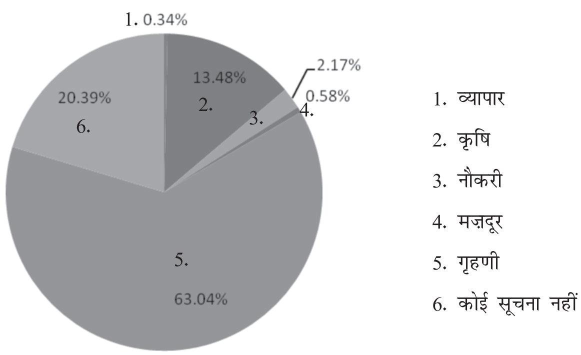

पाई रेखाचित्र 3: विद्यार्थियों की माता का व्यवसाय

उपरोक्त तालिका संख्या 3 तथा पाई रेखाचित्र 3 स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के माता के व्यवसाय को प्रदर्शित करते हैं। आँकड़े इस तथ्य का खुलासा करते हैं कि सबसे अधिक प्रतिशत (68.04%) उन विद्यार्थियों का है जिनकी माता गृहणी हैं। तत्पश्चात् 13.48 प्रतिशत तथा 2.17 प्रतिशत क्रमशः कृषि एवं सरकारी नौकरी में संलग्न हैं। 422 विद्यार्थियों ने इस संदर्भ में कोई सूचना प्रदान नहीं की है।

तालिका 4 प्रशिक्षण की दृष्टि से विद्यार्थियों का विवरण

	बी.ए. तृतीय		बी.कॉम. तृतीय		बी.एससी. तृतीय		कुल संख्या	प्रतिशत
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत		
प्रशिक्षित	92	4.44	41	1.98	24	1.16	157	7.58
अप्रशिक्षित	1339	64.69	364	17.58	210	10.14	1913	92.42
कुल	**1431**	**69.13**	**405**	**19.56**	**234**	**11.30**	**2070**	**100.00**

प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित विद्यार्थियों के प्रतिशत का वितरण तालिका 4 व निम्न पाई रेखाचित्र द्वारा प्रदर्शित किया गया है। स्पष्ट है कि कुल विद्यार्थियों का केवल 7.58 प्रतिशत विद्यार्थी ही प्रशिक्षित है जबकि 92.42 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कोई भी प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया है।

विद्यार्थियों ने इस प्रश्न का उत्तर हाँ में दिया है तथा खुले रूप में अपनी इच्छानुसार रुचि प्रदर्शित की है। 62.77 प्रतिशत विद्यार्थियों ने इस प्रश्न के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण प्रदर्शित किया है और इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया है। इस प्रकार के नकारात्मक उत्तर से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि सम्भवत: विद्यार्थी अपने भविष्य के व्यवसाय चयन के प्रति स्पष्ट नहीं हैं या उन्होंने इस प्रश्नावली को गम्भीरता से नहीं लिया। विद्यार्थियों के कैरियर लक्ष्यों के चयन की अस्पष्टता के हिसाब से इतना अधिक प्रतिशत एक चिन्ता का विषय है।

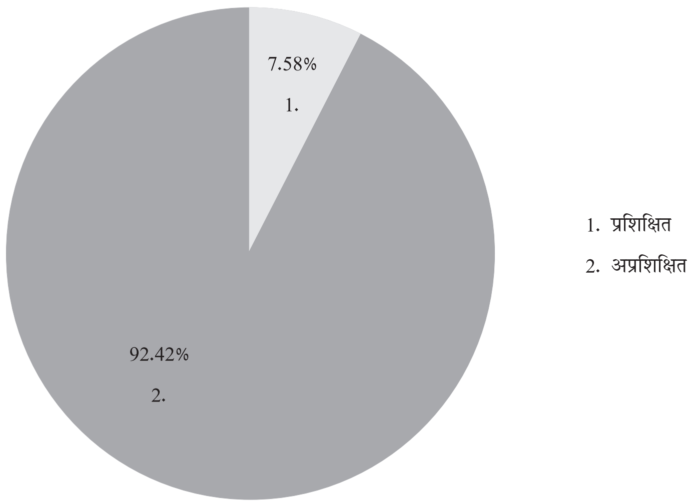

पाई रेखाचित्र 4: प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों का प्रतिशत

तालिका 5: विद्यर्थियों में व्यवसाय के प्रति प्रदर्शित रुचि

	बी.ए. तृतीय		*बी.कॉम. तृतीय*		*बी.एससी. तृतीय*		*कुल संख्या*	*प्रतिशत*
	संख्या	*प्रतिशत*	*संख्या*	*प्रतिशत*	*संख्या*	*प्रतिशत*		
व्यक्त रुचियां	467	22.56	215	10.39	99	4.78	781	37.73
कोई उत्तर नहीं	964	46.57	190	9.18	135	6.52	1289	62.27
कुल	**1431**	**69.13**	**405**	**19.57**	**234**	**11.30**	**2070**	**100.00**

प्रश्नावली के इस प्रश्न से अध्ययनकर्ता यह जानना चाहते थे कि विद्यार्थी अपने कैरियर के चयन के प्रति कितने सजग/तत्पर हैं। तालिका 5 तथा पाई रेखाचित्र 5 यह दर्शाते हैं कि सर्वेक्षण में सम्मिलित विद्यार्थियों में से मात्र 37.73 प्रतिशत

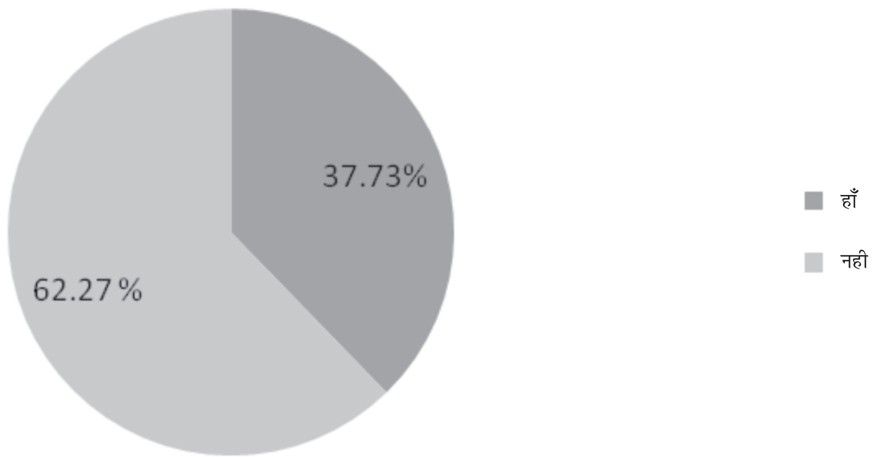

पाई रेखाचित्र 5: विद्यार्थियों में व्यवसाय के प्रति रुचि

पाई रेखाचित्र 5 द्वारा पृथक-पृथक रूप से कला, वाणिज्य व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों द्वारा प्रदर्शित रुचि को दर्शाया गया है। कला वर्ग में पंजीकृत विद्यार्थियों में मात्र 22.56 प्रतिशत, वाणिज्य वर्ग में मात्र 10.39 प्रतिशत तथा विज्ञान वर्ग में मात्र 4.78 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अपनी व्यावसायिक रुचि प्रदर्शित की है।

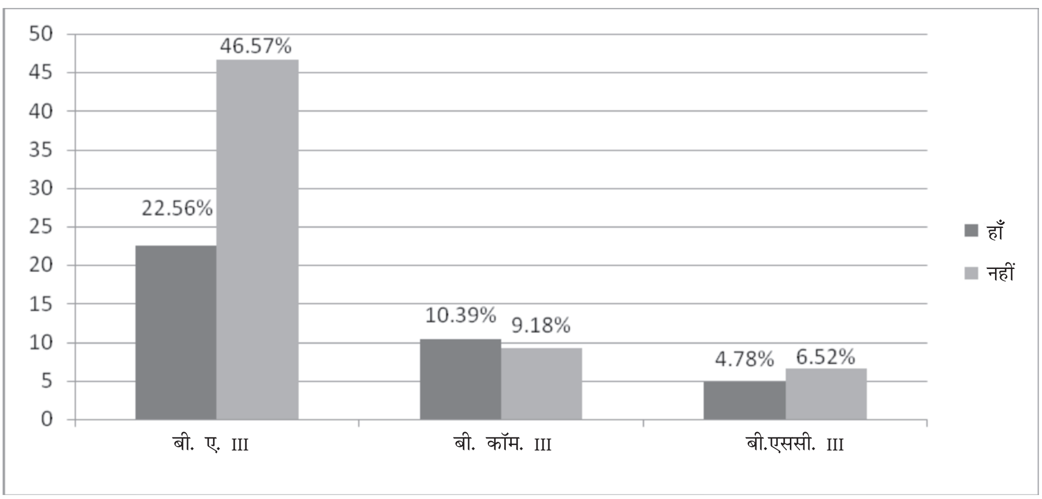

ग्राफ 1 विभिन्न वर्गों के छात्रों द्वारा रुचि अभिव्यक्ति

तालिका 6 द्वारा विद्यार्थियों द्वारा व्यवसाय के संदर्भ में दी गयीं सभी प्राथमिकताओं को समन्वित रूप से प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 6 व्यावसायिक प्राथमिकता

	बी.ए. तृतीय	*बी.कॉम. तृतीय*	*बी.एससी. तृतीय*	*कुल*
कैरियर च्वॉइस	संख्या	संख्या	संख्या	संख्या
एडमिनिस्ट्रेटर/सिविल	07	07	01	15
एग्रीकल्चर	16	00	02	18
बैंकिंग	17	62	06	85
बिज़नेस	20	15	03	38
मार्केटिंग/सेल्स्	04	03	00	07
डिफेंस सर्विस	13	03	06	22
टीचिंग	245	18	43	306
पुलिस/एस.आइ.	09	04	01	14
मैनेजमेंट	02	14	07	23
कम्पयूटर कार्य	30	13	07	50
सरकारी नौकरी	41	19	14	74
सामाजिक कार्य	04	00	00	04
सर्विस/ऑफिस	52	51	05	108
कुछ भी	07	02	02	11
मास.कॉम	01	00	00	01
नर्सिंग/पैरामेडिकल	02	00	01	03
मॉडलिंग/फैशन	05	03	00	08
रेलवे	00	01	00	01
मेडिकल	00	00	04	04
इन्जीनियर	00	00	03	03
फार्मेसी	00	00	03	03
अन्य	10	02	04	16
योग	**485**	**217**	**112**	**814**

तालिका 6 से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों ने सबसे अधिक रुझान शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रदर्शित किया है। तत्पश्चात् कार्यालयी कार्यों, बैंकिंग सैक्टर, सरकारी सेवाओं तथा कम्प्यूटर सम्बंधित कार्यों में रुचि प्रदर्शित की है।

सीमाएं

इस सर्वेक्षण की भी निम्न सीमाएं थीं–

- समस्त कक्षाओं के सभी वर्ष के विद्यार्थियों को सर्वेक्षण में सम्मिलित नहीं किया जा सका।
- विद्यार्थियों की पारिवारिक पृष्ठभूमि की सभी सूचनाओं एवं जनसांख्यिकीय आकड़ों को एकत्रित नहीं किया जा सका जैसे- वार्षिक आय, माता–पिता की शिक्षा आदि।
- प्रश्नावली में कैरियर चयन के अन्य बिन्दुओं को सम्मिलित नहीं किया गया।
- विद्यार्थियों की पारिवारिक पृष्ठभूमि के सांख्यिकीय आकड़ों का कैरियर लक्ष्य/चयन के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया जाना चाहिए था।

निष्कर्ष एवं सुझाव

विद्यार्थियों के जीवन में कैरियर चयन एक जटिल और बहुआयामी प्रत्यय है। कैरियर चयन हेतु बहुत से कारक पृष्ठभूमि में कार्य करते हैं। विद्यार्थी को सूचना प्राप्त होना, सूचना एकत्रण (Seeking informations), शैक्षिक तैयारी आदि। सर्वेक्षण का मुख्य उद्देश्य महाविद्यालय के स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के कैरियर चयन की जानकारी प्राप्त करना, उनके कैरियर तत्परता (Career Readiness) का अध्ययन करना था। स्नातक कक्षा विद्यार्थियों के जीवन में महत्त्वपूर्ण होती है। यह अवस्था विद्यार्थियों के जीवन की सफलता को प्रतिबिम्बित करती है। परन्तु सर्वेक्षण में पाया गया कि कुल पंजीकृत 2070 विद्यार्थियों में से 1289 (62 प्रतिशत) ने व्यवसाय के प्रति कोई रुझान प्रदर्शित न करते हुए सम्बन्धित सूचना प्रदान नहीं की है (तालिका 5)। साथ ही 9.58 प्रतिशत विद्यार्थियों ने पिता के व्यवसाय के संदर्भ में तथा 20.38 प्रतिशत ने माता के व्यवसाय के संदर्भ में कोई जानकारी प्रदान नहीं की है (तालिका 2 व 3)। 62 प्रतिशत विद्यार्थियों का व्यायवसायिक रुझान प्रदर्शित न करना कैरियर के प्रति सजग न होने की स्थिति को प्रदर्शित करता है। वर्तमान में जबकि शिक्षा मात्र व्यवसाय प्राप्ति का साधन बनकर रह गयी है, विद्यार्थी से माध्यमिक स्तर से ही कैरियर के प्रति सजग रहते हुए व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने की आशा की जाती है। दो तिहाई से भी अधिक विद्यार्थियों का इस संदर्भ में रुचि प्रदर्शित न करना ही कैरियर के प्रति उनकी लापरवाही को प्रकट करता है। केवल 37.73 ने ही व्यवसाय के प्रति रुचि प्रदर्शित की है, परन्तु यहां पर भी उनका झुकाव केवल पांच व्यवसायों के प्रति ही अधिक है। 623 विद्यार्थियों ने केवल पांच क्षेत्रों को इंगित किया है जबकि शेष 58 विद्यार्थियों की रुचि 17 क्षत्रों में बंटी हुई है। इससे यह भी स्पष्ट है कि परम्परागत विषयों को पढ़ने वाले विद्यार्थियों का कैरियर के प्रति चुनाव भी परम्परागत क्षेत्रों जैसे–शिक्षण, बैंकिंग, लिपिकीय संवर्ग, किसी भी प्रकार की सरकारी सेवाओं के प्रति बना हुआ है। कैरियर के उभरते आयामों से विद्यार्थी अनभिज्ञ हैं। विद्यार्थियों के कैरियर

लक्ष्यों की अस्पष्टता को देखते हुए कैरियर के संदर्भ में उचित दृष्टिकोण विकसित करने हेतु भविष्य में निर्देशनात्मक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सकता है। महाविद्यालय में प्रवेश के समय विद्यार्थियों को विषय चयन के संदर्भ में निर्देशन प्रदान किया जा सकता है। व्यावसायिक जागरूकता हेतु कार्यशालाएं आयोजित की जा सकती हैं। साथ ही विभिन्न विषयों में कैरियर चयन हेतु अतिथि व्याख्यानों का आयोजन किया जा सकता है। साथ ही इस बात पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है कि विद्यालयी स्तर पर कैरियर काउंसलिंग सैल अनिवार्य रूप से स्थापित किये जायें, क्योंकि कैरियर निर्धारण का पहला पग विद्यालयों में ही रखा जाता है, जब ग्यारहवीं में प्रवेश के समय विद्यार्थी विज्ञान, कला अथवा वाणिज्य वर्ग का चयन करता है। सामान्यतया देखने में आता है कि विद्यार्थी विषयों का चयन साथियों के साथ भेड़चाल के आधार पर करते हैं। उन्हें इस बात का ध्यान नहीं रहता कि विषय उनकी रुचि का है अथवा नहीं। भविष्य में यह विषय उनकी रुचि के अनुसार व्यवसाय दिलाने में कहां तक सहायक होगा, इस विषय में तो सोचा ही नहीं जाता। इस समय विद्यार्थी किशोरावस्था में होता है और किशोरावस्था जीवन का महत्त्वपूर्ण काल है। इस अवस्था में विद्यार्थी अपने विद्यालयी जीवन का आनन्द ले रहा होता है। इसी परिप्रेक्ष्य में विद्यालयों में कैरियर काउन्सिलिंग की आवश्यकता महसूस की जाती है। इण्टरमीडिएट स्तर पर विद्यार्थी से उम्मीद की जाती है कि उसने भविष्य के बारे में एक सुस्पष्ट दृष्टिकोण विकसित कर लिया हो क्योंकि विषयों का चयन भावी कार्यक्षेत्र को ध्यान में रखकर ही किया जाना चाहिए। विषय चयन में ही सर्वाधिक सावधानी की आवश्यकता होती है। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर से ही विद्यार्थियों को निर्देशन व परामर्श सेवाएं प्रदान की जानी चाहिए। विद्यार्थी की रुचि को देखते हुए उसे विविध व्यवसायों के संदर्भ में जानकारी प्रदान करते हुए कैरियर के प्रति उसके दृष्टिकोण को स्पष्ट करने में उसकी सहायता की जानी चाहिए। सिरोही (2013) ने भी अपने शोध के माध्यम से पाया कि माध्यमिक विद्यालयों में संस्थागत रूप से व्यावसायिक निर्देशन व परामर्श सेवाओं को उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। माध्यमिक स्तर ही वह स्तर है जहां पर विद्यार्थी विविध समस्याओं से जूझता है और इसी प्रक्रिया में जीवन कौशल का विकास करता है। यदि यहां पर उसे उचित निर्देशन व परामर्श मिल जाये तो वह अपने भविष्य के प्रति सजग हो जाता है, अन्यथा वह शिक्षा तो अवश्य प्राप्त कर लेता है परन्तु उसका प्रयोग करना नहीं सीख पाता है। इण्टरमीडिएट स्तर पर विद्यार्थी विविध तकनीकी व व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु आवेदन करता है। अतः यहीं पर काउंसलिंग की विशेष आवश्यकता है। महाविद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए उन्हें काउंसलिंग प्रक्रिया से जोड़ना भी एक कठिन प्रक्रिया है क्योंकि यहां पर विद्यार्थी-शिक्षक का सम्बन्ध उतना प्रगाढ़ नहीं होता जितना कि माध्यमिक स्तर पर। यहां पर होनहार विद्यार्थी ही आवश्यकता पड़ने पर परामर्श हेतु काउन्सलर के पास पहुंचते हैं और बहुत कम विद्यार्थी ही कैरियर काउंसलिंग सैल की सेवाओं का उपयोग कर पाते हैं। फॉड (2006) ने यह जानने के लिए कि क्या विश्वविद्यालय

स्तर पर विद्यार्थी काउंसलिंग व कैरियर सेवाओं के विषय में सजग हैं, एक अध्ययन किया और पाया कि विद्यार्थी अपने कैरियर के संदर्भ में निर्णय लेने में परेशानी महसूस करते हैं। लगभग आधे विद्यार्थियों को कैरियर सेवाओं की जानकारी है, लेकिन कुछ ने ही उन सेवाओं का प्रयोग किया है। जबकि माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी व शिक्षक का व्यक्तिगत सम्पर्क होने के कारण शिक्षक विद्यार्थी की रुचि, स्तर तथा विविध क्षेत्रों में प्रदर्शन को देखते हुए स्वयं उसे उचित मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है। साथ ही कैरियर गाइडेन्स सैल के माध्यम से विद्यार्थियों को इण्टर के पश्चात् भविष्य में विविध प्रशिक्षण क्षेत्रों (मेडिकल/ इंजीनियरिंग/ डिजाइनिंग आदि) की जानकारी देते हुए तदनुरूप प्राप्त होने वाले व्यवसायों की जानकारी देते हुए विद्यार्थियों को स्वयं की क्षमताओं को पहचानने तथा भविष्य के संदर्भ में उचित निर्णय लेने के लिए तैयार किया जा सकता है। अली (2000) ने भी वर्तमान में प्रचलित व्यवसायों के संदर्भ में जागरुकता प्रदान करने, तत्सम्बन्धी आवश्यक योग्यताओं की जानकारी देने, विषय संगतता, प्रशिक्षण संस्थाएं, वेतन तथा व्यावसायिक गुण-दोष आदि के द्वारा कैरियर सजगता प्रदान करने हेतु कैरियर मेलों के आयोजन पर बल दिया। अतः कहा जा सकता है कि कैरियर गाइडेन्स/काउंसलिंग सेल माध्यमिक स्तर पर अनिवार्य रूप से खोले जाने की आवश्यकता है।

संदर्भ

अली, डी.जी., एफ.सी.केर्यू, 2000, क्रिएटिंग कैरियर अवेयरनैस अमंग सैकेण्डरी स्कूल स्टूडैंट्स, *नाइजीरियन जरनल ऑफ गाइडेंस एण्ड काउंसलिंग, वॉल्यूम-07*, संख्या-01, पृ. 165-175, वैबसाइट- www.ajol.info.

फॉड नाड्या ए. एवं अन्य, 2006, नीड, अवेयरनैस एण्ड यूज़ ऑफ कैरियर सर्विसेज़ फॉर कॉलेज स्टूडेंट्स्, *जरनल ऑफ कैरियर असेसमेंट, नव.* 2006, वॉल्यूम-14, संख्या-04,पृ. 407-420.

सिरोही, विनीता, 2013, वोकेशनल गाइडेंस एण्ड कैरियर मैच्योरिटी अमंग सैकेण्डरी स्कूल स्टूडेंट्स्: एन इण्डियन एक्सपीरियन्स, *यूरोपियन साइटिंफिक जरनल,* जून 2013, eujournal.org./index.php/esj/article.